हिंदी पथ प्रदर्शकों के निजी पत्रः पारस्परिक विमर्श के साक्ष्य

प्रस्तुत खंड में हिंदी के प्रख्यात साहित्यकारों व पथ प्रदर्शकों द्वारा समय-समय पर एक दूसरे को लिखे गये निजी पत्र, अनेक महत्वपूर्ण सामाजिक, साहित्यिक, राजनीतिक घटनाओं के मुखर साक्ष्य हैं। ये पत्र जहाँ उन मनीषियों के आपसी संबंधों की ऊष्मा व उनके व्यक्तित्व के जाने-अनजाने पहलुओं की झलकी देते हैं वहीं उनकी रचनाधर्मिता, शैलीगत विशिष्टिताओं व अवधारणाओं को भी उजागर करते हैं । इस खंड में महावीर प्रसाद द्विवेदी, सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा, मुंशी प्रेमचन्द, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', राहुल सांकृत्यायन, पं० हजारी प्रसाद द्विवेदी आदि अनेक महान् साहित्यकारों व हिंदी सेवियों द्वारा निजता के पलों में लिखे गए इन पत्रों को पढ़कर सम्मोहन की स्थिति में पहुँचना स्वाभाविक है।

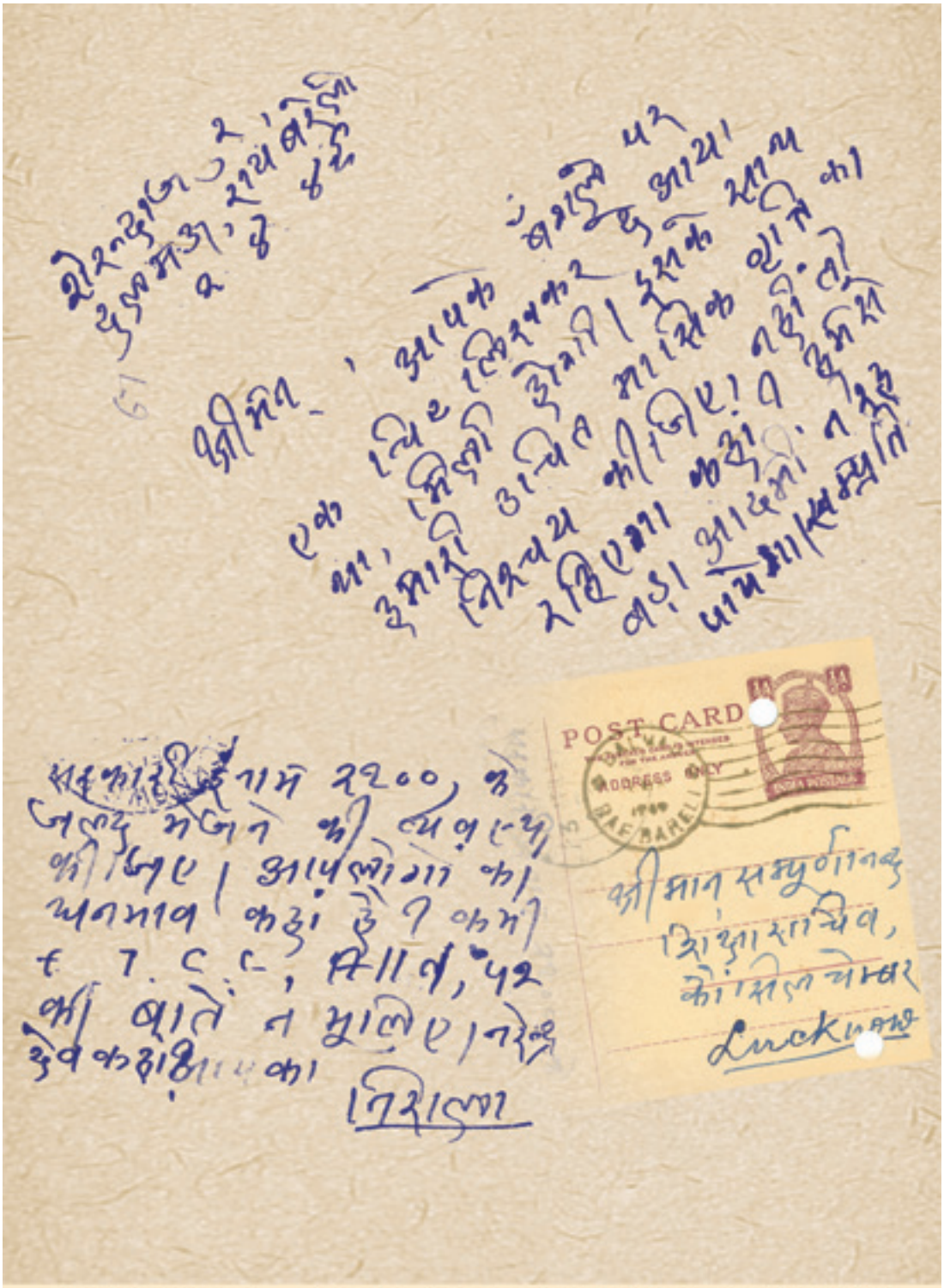

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' द्वारा श्री संपूर्णानंद को मासिक वृत्ति के लिए लिखा गया पत्र, 2 अप्रैल 1949

Letter from Suryakant Tripathi 'Nirala' to Shri Sampurnand, expressing his requirement for a monthly stipend, 2 April 1949.

S. 20. 53

९ [illegible]
प्रयाग
९ - १२ - १९४६

मान्य भाई,

वंदे

साहित्यकार-संसद के सम्बन्ध में एक आवेदनपत्र आपके पास पहुँचा होगा मेरा पत्र भी आपको मिल गया होगा. हमसब विश्वास के साथ अनुकूल उत्तर की प्रतीक्षा में हैं; क्योंकि उसके अभाव में हमारा कार्यक्रम रुक जायगा। आप बहुत व्यस्त होंगे यह मैं जानती हूँ, किन्तु कर्तव्य बाध्य करता है कि आपको कष्ट दूँ।

मैं स्वयं आती किन्तु इधर एक मास से मेरा स्वास्थ्य बहुत खराब हो गया है। प्रतिदिन इंजेक्शन ले रही हूँ - यदि इसबार भी कोई उत्तर न आया तो मुझे ऐसी स्थिति में ही आना पड़ेगा - साहित्यकार-संसद को आपकी सहायता से वंचित रह जाना पड़े इसे मेरा मन सहज ही स्वीकार नहीं करेगा. चाहे इसे मेरा दुराग्रह मानें या सत्याग्रह

उत्तर की प्रतीक्षा में

विनीत
महादेवी

महादेवीवर्मा द्वारा साहित्यकार संसद के संबंध में संपूर्णानंद जी को लिखा गया पत्र, 9 दिसम्बर 1946

Letter from Mahadevi Varma to Sampurnanand Ji, relating to matters of the Sahityakar Sansad, 9 December 1946.

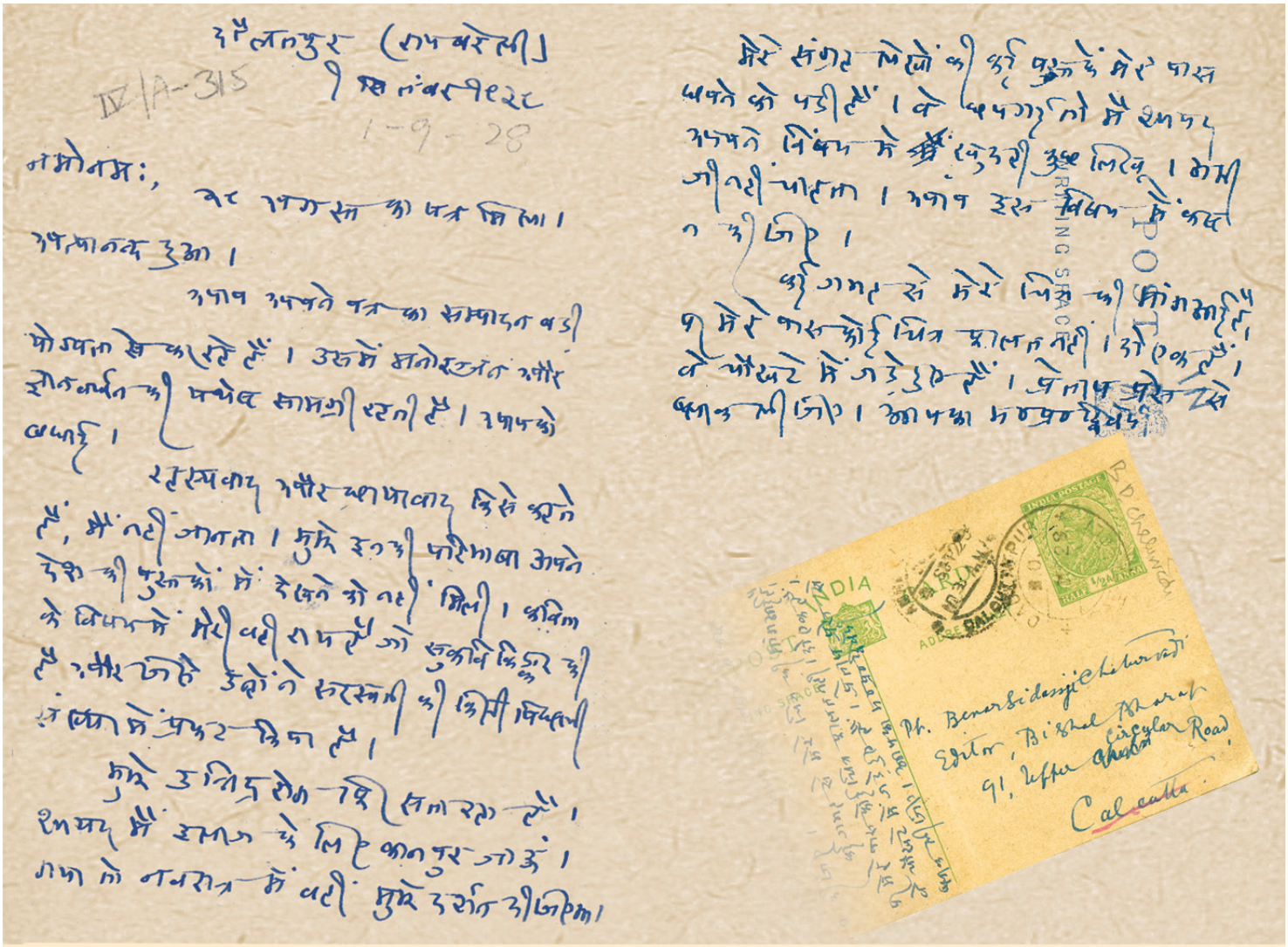

दौलतपुर (रायबरेली)
1 सितंबर १९२८

IV/A-315

1-9-28

नमोनमः,

२८ अगस्त का पत्र मिला। अत्यानन्द हुआ।

आप अपने पत्र का सम्पादन बड़ी योग्यता से कर रहे हैं। उसमें मनोरंजन और ज्ञानवर्धन की यथेष्ट सामग्री रहती है। आपको बधाई।

रहस्यवाद और छायावाद किसे कहते हैं, मैं नहीं जानता। मुझे इनकी परिभाषा अपने देश की पुस्तकों में देखने को नहीं मिली। कविता के विषय में मेरी वही राय है जो सुकवि किंकर की है और जिसे उन्होंने सरस्वती की किसी पिछली संख्या में प्रकट किया है।

मुझे उन्निद्र रोग फिर सताता है। शायद मैं इलाज के लिए कानपुर जाऊं। जाना तो नवरात्र में वहीं मुझे दर्शन दीजिएगा।

मेरे संग्रह लेखों की कई पुस्तकें मेरे पास छपने को पड़ी हैं। वे छप जायेंगी तो मैं शायद अपने विषय में कुछ लिखूं। अभी जी नहीं चाहता। आप इस विषय में कष्ट न कीजिए।

कई जगह से मेरे चित्र की मांग आई है। मेरे पास कोई चित्र फ़ालतू नहीं। जो थे वे चौखटे में जड़े हुए हैं। [illegible] क्षमा कीजिए। आपका म० प्र० द्विवेदी

Pt. Benarsidasji Chaturvedi
Editor, Vishal Bharat
91, Upper Circular Road
Calcutta

महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा बनारसीदास चतुर्वेदी को लिखा गया पत्र जिसमें रहस्यवाद और छायावाद पर टिप्पणी की गई है, 1 सितम्बर 1928

Letter from Mahaveer Prasad Dwivedi to Banarsidas Chaturvedi, discussing the literary phenomena of "Rahasyavaad" (Mysticism) and Chhayavaad, 1 September 1928.

[illegible] 24 (23)

I/7-493

"मिश्र-भवन", गोलागंज,
लखनऊ, ७/२/३६

प्रिय टंडन जी,

सादर अभिवादन।

आप को यह जान कर शोक होगा कि मेरे पूज्य अग्रज, श्रीमान् पं. गणेश बिहारी मिश्र का देवलोक ता: ३/२ को पौने बारह बजे रात को हो गया! हम लोगों को असीम दुःख सागर में डाल कर वे चल बसे। यों तो उन की आयु ७१ वर्ष की थी और २ अनुज, २ पुत्र, २ भतीजे और कई पौत्र उन्होंने छोड़े, पर हम लोगों को कुछ भी संतोष नहीं होता। समय अपना काम अवश्य ही करेगा पर अभी हम सब अत्यंत संतप्त हो रहे हैं।

अभी आप का प्रेम-पूर्ण पत्र मिला। सुखदेव जी ने आप की सारी बात मुझसे कही थी। श्रीमान् महाराजा साहब को सभापति बनने की जरा भी उत्सुकता नहीं, पर बहुत से हिंदी हितैषियों का विचार था कि अब उन्हें उक्त पद पर आसीन होने का समय पूर्णतया आ गया है। अस्तु, यदि आप इस बात से सहमत नहीं हैं तो मैं कुछ भी कहना नहीं चाहता। पूज्य मालवीय जी कई बार सभापति हो चुके हैं और श्री मैथिली शरण जी का नम्बर मैं महाराजा साहब के आगे बिलकुल नहीं समझता, पर आप जैसा उचित समझें करें मुझे उस का कदापि विरोध नहीं हो सकता।

भवदीय स्नेह भाजन,
श्यामबिहारी मिश्र।

श्रीयुत् बा० पुरुषोत्तम दास जी टंडन,
प्रयाग।

कृ० उलटिए। P.T.O.

पुनः / मैं अपना वोटिंग पेपर बिना किसी के नाम भरे पर अपना हस्ताक्षर करके, आप की सेवा में भेजता हूँ। जिन व्यक्तियों के नाम आप सम्मेलन एवं परिषदों के सभापति होने के योग्य उचित समझें उन्हें इस पर मेरी ओर से भर दीजिए। मैं आप को पर पूर्ण अधिकार देता हूँ। श्याम बि० मिश्र
७/२/३६.

श्याम बिहारी मिश्र द्वारा पुरुषोत्तमदास टंडन को लिखा गया पत्र जिसमें उन्होंने अपने अग्रज गणेश बिहारी मिश्र की मृत्यु की सूचना देते हुए सम्मेलन व परिषद के पदाधिकारियों के चुनाव का ज़िक्र किया है, 7 फरवरी 1937

Letter from Shyam Bihari Mishra to Puroshottam Das Tandon, wherein he had conveyed the well being elder brother, Ganesh Bihari Mishra. He also discusses the election of various office bearers of the Council and Conference, 7 February 1937.

16-8-56.

प्रणाम,

पुस्तकें दोनों मिलीं। शर्माजी के पत्रों का प्रकाशन ऐतिहासिक महत्व का काम है। इसपर विस्तारसे फिर लिखूंगा। "प्रेमचंद : घरमें" भी इधर कई वर्षोंसे अप्राप्य था।

श्री प्रभात वर्धमान हमारे मित्र हैं और दिल्ली रेडियोमें नये नये नियुक्त हुए हैं। आप से मिलेंगे। अभी डेरे की खोज में व्यस्त होंगे। परिवार पटने में है। प्रतिभाशाली सहृदय सज्जन हैं... मैंने उन्हें भी आपसे मिलनेको कहा है...

नागार्जुन आपका

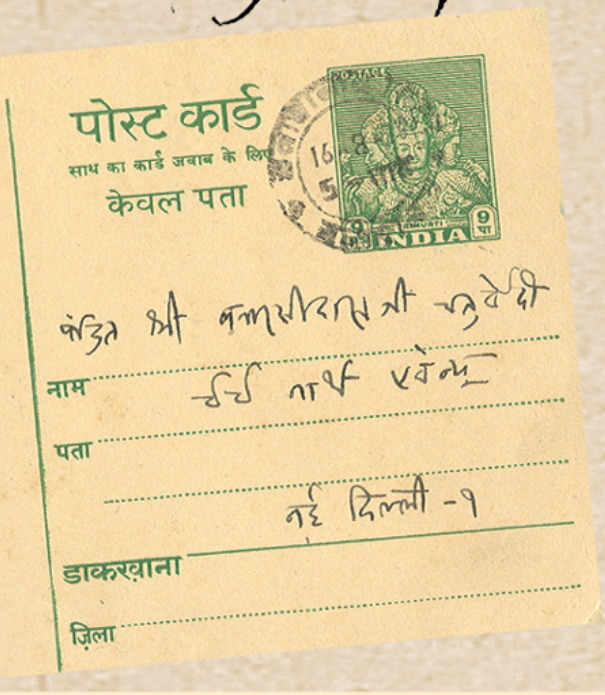

नागार्जुन द्वारा बनारसीदास चतुर्वेदी को लिखा पोस्टकार्ड, 16 अगस्त 1956

PHONE NO. 8491. ESTABLISHED 1918.

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास.

DAKSHINA BHARAT
HINDI PRACHAR SABHA,
MADRAS.

28 I/II-747

P.O. THYAGARAYANAGAR.

.११ फरवरी १९३७.

498

सेवा में,

श्री पुरुषोत्तमदास जी टंडन,
इलाहाबाद।

पूज्यवर,

आपको विदित ही है कि गत १८ वर्षों से मद्रास में राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रचार का काम किस तरह से हो रहा है इस संबन्ध में आवश्यक साहित्य आपकी सेवा में अलग भेजा जा रहा है।

प्रतिवर्ष बडे दिनों की छुट्टियों में मद्रास शहर में दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा का समावर्तन समारंभ होता है। उसमें सभा के स्नातकों को उपाधियां प्रदान की जाती हैं। उस अवसर पर किसी बडे साहित्य तथा सम्मान्य नेता के भाषण भी हुआ करते हैं। गत पांच समावर्तन संस्कारों में सर्व श्री काका कालेलकर, प्रो. आगा महम्मद शुस्त्री, स्वर्गीय प्रेमचन्द, रामनरेशजी त्रिपाठी, तथा पंडित सुन्दरलालजी ने अनुक्रम से भाषण दिया था। हमारी परीक्षा में अब तक ५०००० विद्यार्थी बैठे हैं। हर साल हमारी परीक्षाओं में कोई पांच हजार विद्यार्थी बैठते हैं। उनमें प्रायः ४०० विद्यार्थी उपाधि परीक्षा में बैठते हैं। इस वर्ष २०० विद्यार्थी उपाधि लेने केलिये आयेंगे।

इस वर्ष चूंकि हिन्दी साहित्य सम्मेलन का आगामी अधिवेशन मद्रास में ही होनेवाला है, इसलिये ईस्टर की छुट्टियों में ही समावर्तन समारंभ भी करने का निश्चय किया गया है। आप से हमारी विनीत प्रार्थना है कि आप इस अवसर पर भाषण देना स्वीकार करें। आप जैसे उच्च साहित्यकों के आशीर्वाद से हिन्दी प्रचार में प्रोत्साहन मिलनेवाला है। आशा है आप हमें निराश नहीं करेंगे और ~~[illegible]~~ स्वीकृति भेजने की कृपा करेंगे।

भवदीय,
[signature]
मंत्री.

पुनश्चः

आज ही आपको एक तार दिया जा चुका है। उसकी प्रतिलिपि इसके ~~[illegible]~~ है। आपने तार से स्वीकृति भेज दी होगी।

Pray wire accepting addressing Sabhas Convocation Easter holidays.
H Sharma

श्री. रा.

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास के मंत्री की ओर से पुरुषोत्तमदास टंडन को लिखा गया पत्र जिसमें दक्षिण भारत में हिंदी प्रचार सभा की गतिविधियों से अवगत कराया गया है, 11 फरवरी 1937

Letter from the Dakshin Bharat Hindi Prachaar Sabha, Madras to Puroshottam Das Tandon, apprising him of the activities of the organization, 11 February 1937.z

soliciting an article for P:

-(9)-

I/7-742

'हंस' कार्यालय,
बनारस।
११/१/१९३७

४

संपादिका
शिवरानी देवी

प्रिय बन्धुवर,

आपको ज्ञात ही है, मार्च का 'हंस' 'प्रेमचन्द-स्मृति-अंक' होगा। इसके विषय में थोड़ी-बहुत सूचना आप 'हंस' के द्वारा पाते रहे हैं। इसका संपादन श्री बाबूराव विष्णु पराड़करजी करेंगे। अभी वे बीमार हैं। और समय कम रह गया है; इस-लिये उन्होंने मुझे कहा है कि मैं आप से उस अंक के लिये कोई रचना प्रेमचंद के साहित्य या व्यक्तित्व के विषय में माँगू। साथ ही उन्होंने अपनी इस असमर्थता के लिये क्षमा माँगी है। सब सामग्री कार्यालय में एक फ़रवरी तक पहुँचना है; इसलिए आप से विनय है कि आप भी एक फ़रवरी तक निश्चय रूप से ही उक्त अंक के लिये अपनी रचना भेजें।

विनीता,
शिवरानी देवी

स्व0 प्रेमचंद की पत्नी शिवरानी देवी द्वारा पुरुषोत्तमदास टंडन को 'हंस' के प्रेमचंद स्मृति अंक के विषय में भेजा गया पत्र, 11 जनवरी 1937

Letter from Shivrani Devi, wife of Premchand to Puroshottam Das Tandon, relating to the special issue of 'Hans' devoted to Munshi Premchand, 11 January 1937.

B.D.Chaturvedi

अभिनव भारती ग्रन्थमाला

IV/A 2...6

सम्पादक—
हजारीप्रसाद द्विवेदी
शान्तिनिकेतन
बोलपुर E. I. Ry.

प्रकाशक—
शम्भूप्रसाद वर्म्मा
१७१-ए, हरीसन रोड,
कलकत्ता

.........................१९ ४१

मान्य अग्रज पंडितजी,

सादर प्रणाम।

बहुत दिनों बाद पत्र लिख रहा हूं। बीच में आँखें फिर खराब हो गई थीं और पढ़ना लिखना बंद कर देना पड़ा था। अब ठीक हो रही हैं।

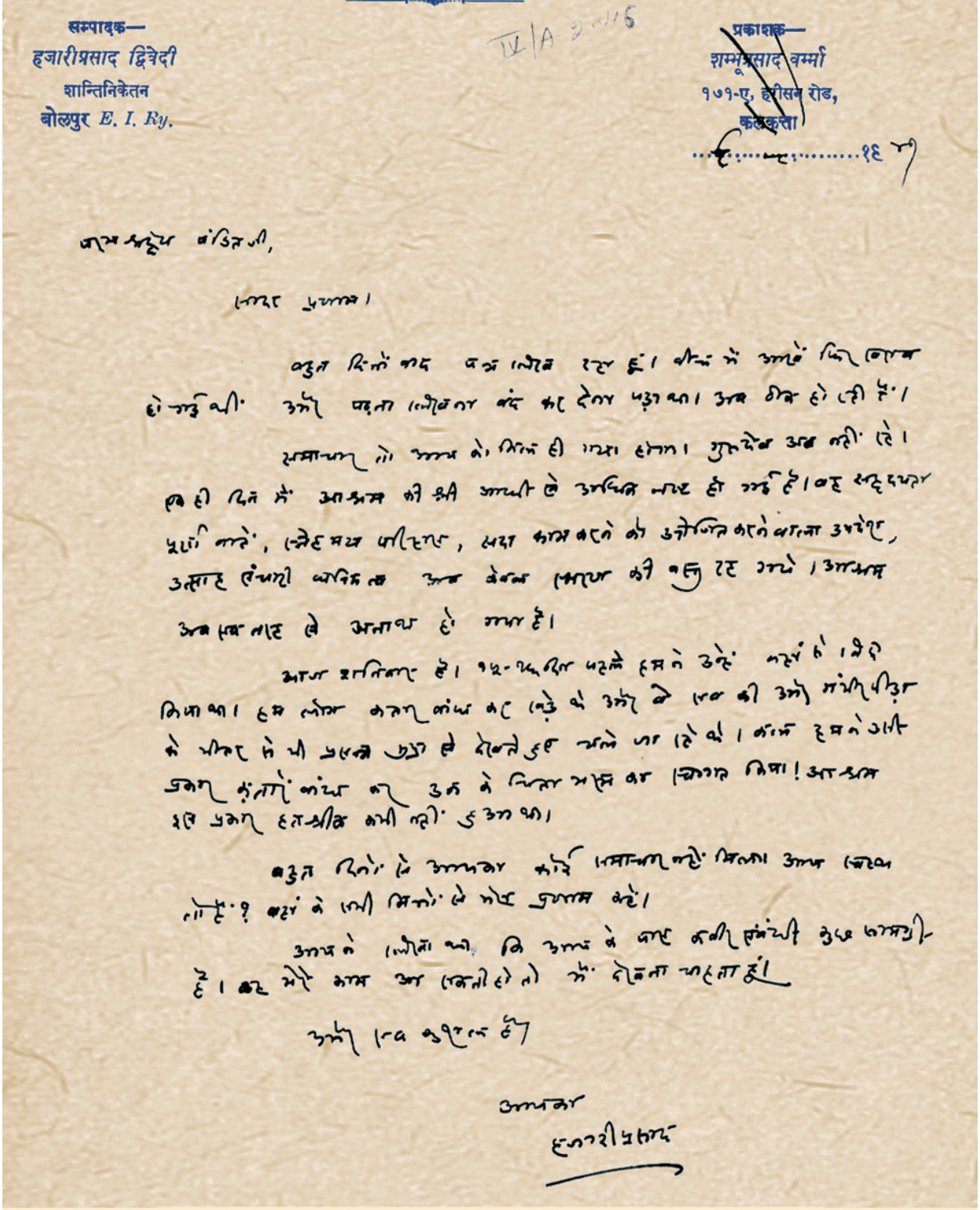

समाचार तो आप को मिल ही गया होगा। गुरुदेव अब नहीं रहे। एक ही दिन में आश्रम की श्री सारी से अचिन्त्य नष्ट हो गई है। वह सहृदयता पूर्ण बातें, स्नेहमय परिहास, सदा काम करने को उत्तेजित करने वाला उपदेश, उत्साह संचारी व्यक्तित्व अब केवल स्मरण की वस्तु रह गये। आश्रम अब सब तरह से अनाथ हो गया है।

आज शनिवार है। १४-१५ दिन पहले हमने उन्हें यहां से विदा किया था। हम लोग कतार बांध कर खड़े थे और वे सब की ओर गंभीर पीड़ा के भीतर से भी प्रसन्न मुद्रा से देखते हुए चले जा रहे थे। कल हमने उसी प्रकार कतारें बांध कर उन के चिता भस्म का स्वागत किया! आश्रम इस प्रकार हतश्री कभी नहीं हुआ था।

बहुत दिनों से आपका कोई समाचार नहीं मिला। आप स्वस्थ तो हैं? वहां के सभी मित्रों से मेरा प्रणाम कहें।

आपने लिखा था कि आप के पास कवि संबंधी कुछ सामग्री है। [illegible] मेरे काम आ सकती हो तो मैं देखना चाहता हूं।

और सब कुशल है।

आपका
हजारीप्रसाद

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी द्वारा गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के निधन पर बनारसीदास चतुर्वेदी को लिखा गया मर्मस्पर्शी पत्र, 9 अगस्त 1941

Letter from Acharya Hazari Prasad Dwivedi to Banarsidas Chaturvedi, expressing his emotions on the demise of Gurudev Rabindranath Tagore, 9 August 1941.

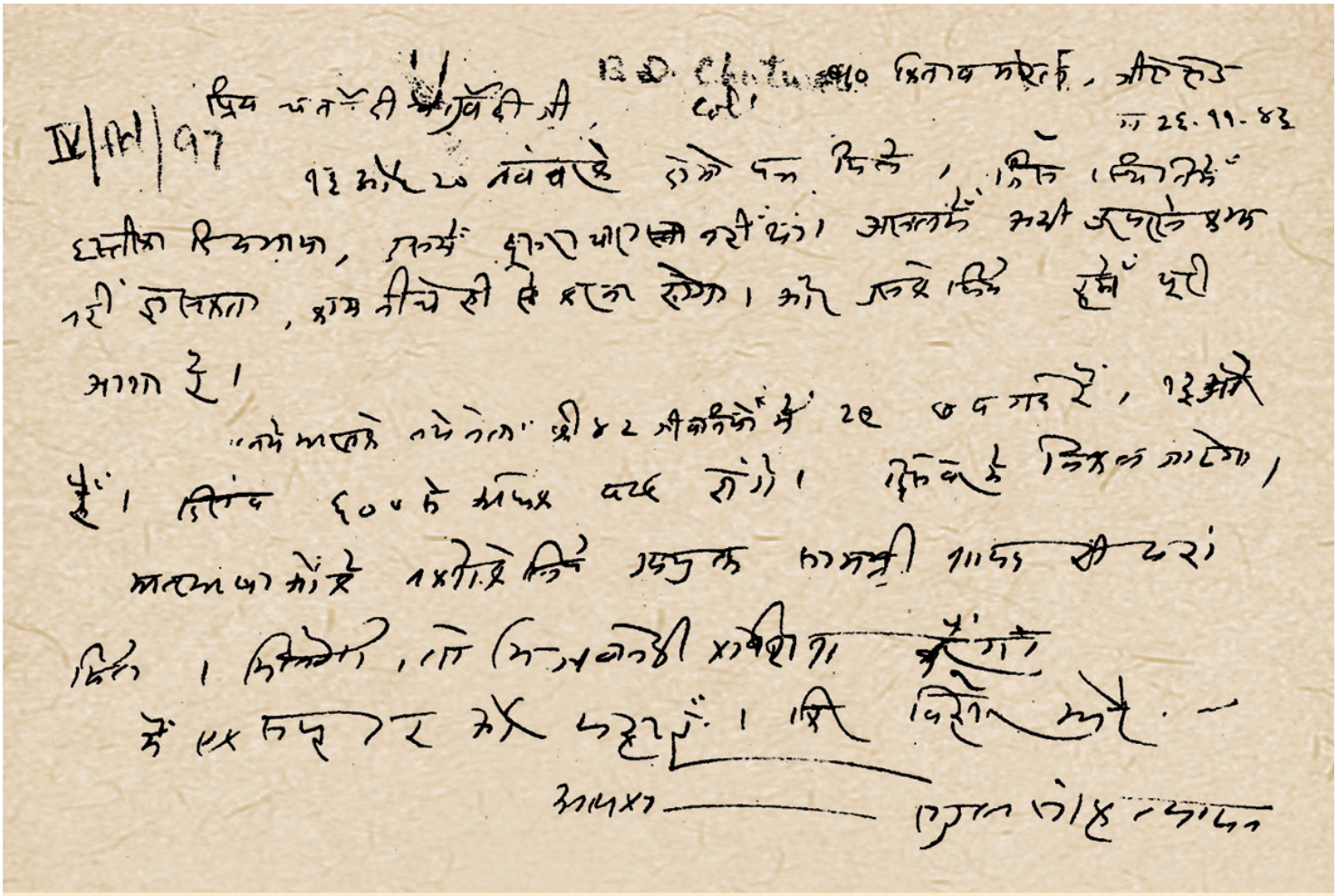

राहुल सांकृत्यायन द्वारा श्री बनारसीदास चतुर्वेदी को लिखा गया पत्र जिसमें उन्होंने 'नये भारत के नये नेता' के प्रकाशन की चर्चा की है, 26 नवम्बर 1943

Letter from Rahul Sanskritiyan to Banarsidas Chaturvedi, discussing the publication entitled "Naye Bharat Ke Naye Neta", 26 November 1943.

८. २०. 53

१ ऐलगिन रोड
प्रयाग
९ - १२ - १९४६

मान्य भाई

वन्दे

साहित्यकार-संसद के सम्बन्ध में एक आवेदनपत्र आपके पास पहुंचा होगा मेरा पत्र भी आपको मिल गया होगा. हमसब विश्वास के साथ अनुकूल उत्तर की प्रतीक्षा में हैं; क्योंकि उसके अभाव में हमारा कार्यक्रम रुक जायगा। आप बहुत व्यस्त होंगे यह मैं जानती हूं, किन्तु कर्तव्य बाध्य करता है कि आपको कष्ट दूं -

मैं स्वयं आती किन्तु इधर एकमास से मेरा स्वास्थ्य बहुत खराब हो गया है। प्रतिदिन इन्जेक्शन ले रही हूं - यदि इसबार भी कोई उत्तर न आया तो मुझे ऐसी स्थिति में ही आना पड़ेगा - साहित्यकार-संसद को आपकी सहायता से वंचित रह जाना पड़े इसे मेरा मन सहज ही स्वीकार नहीं करेगा. चाहे इसे मेरा दुराग्रह मानें या सत्याग्रह

उत्तर की प्रतीक्षा में

विनीत
महादेवी

महादेवीवर्मा द्वारा साहित्यकार संसद के संबंध में संपूर्णानंद जी को लिखा गया पत्र, 9 दिसम्बर 1946

Letter from Mahadevi Varma to Sampurnanand Ji, relating to matters of the Sahityakar Sansad, 9 December 1946.

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी द्वारा 'सुराज' की व्याख्या करता हुआ श्री बनारसीदास चतुर्वेदी को लिखा गया पत्र, 21 मई 1947

Letter from Acharya Hazari Prasad Dwivedi to Shri Banarsidass Chaturvedi, alongwith his explanation of the term 'Swaraj', 21 May 1947.

शान्तिनिकेतन
१७.१.५०

पूज्य पंडित जी,

सादर प्रणाम।

नववर्ष (अवश्य ही, अंग्रेजी नववर्ष) के आरंभ में ही आपका संदेश-वाक्य मिला। मैं उसका आशय समझ गया। वह मेरे मन के अनुकूल है। पर मैं क्या जानबूझ कर बुता रहता हूं! गुरुदेव का वह गान तो आपको याद होगा — 'भार केनो बहिबो ... हे मित्र, ... बोझा आमार नामाओ' — हे मित्र, मैं बोझ के वेग से ही चलता रहता हूं, मेरा यह बोझा उतार दो। सो, यह बोझ स्वाभाविक बना है। इसमें कोई दिखावा नहीं है, कोई तकलीफ नहीं है। जो बोझ सहज हो वही ठीक है, जो सहज नहीं वही भार है।

इधर बहुत दिनों से अनुभव कर रहा हूँ कि मौज में कोई लेख नहीं लिख रहा हूं, केवल वादों की पूर्ति कर रहा हूं। कुछ भी ऐसा नहीं लिख रहा हूं जिससे स्वयं अपना प्रसन्न हो और यह तो हो ही नहीं सकता कि अपना प्रसन्न न हो और कोई कुछ लायक चीज़ हो जाय। लेकिन इससे बचके निकलने का भी कोई उपाय नहीं है।

आशा है, आप सानन्द और प्रसन्न हैं। मैं अच्छा हूं।

आपका,
हजारीप्रसाद द्विवेदी

IV/A-2088

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी द्वारा बनारसीदास चतुर्वेदी को शांतिनिकेतन से लिखा गया आत्मीय पत्र जिसमें उनके व्यक्तित्व की निश्छलता की झलक मिलती है, 17 जनवरी 1950

Letter from Acharya Prasad Dwivedi to Shri Banarsidass Chaturvedi, giving us a glimpse of his endearingly innocent personality, 17 January 1950.

का० वि० वि०
७-२-६६.

समान्य श्री संपूर्णानन्द जी,

आपका पत्र दिनाङ्क० २८ जनवरी १९६६ मिला। 'योग-दर्शन' पुस्तक की प्रति भी मिली है। आपकी आलोचनाएं मुझे विचारोत्तेजक लगीं। आपने पतंजलि के विचारों पर भृगग्राहिकया पकड़ कर विचार किया है जैसा कम देखने में आता है। मैं सहमत हूँ कि अपने प्राचीन शास्त्रों का अध्ययन मौलिक ज्ञानप्राप्ति के लिए होना चाहिए। आपने जो योग सूत्रों के विषय लिखा है वही बात वेदों और उपनिषदों पर भी घटित होती है। अँग्रेजी ढंग के विश्वविद्यालय और संस्कृत विद्यालय दोनों ही परीक्षाओं के मोह में ग्रस्त हैं। सच्चा ज्ञान साधन कुछ ही विद्वानों या आश्रमों में रह गया है। इतना ही संतोष का विषय है कि परीक्षाओं के माध्यम से लोग इन ग्रन्थों को पढ़ तो लेते हैं।

भूमिका के पृ० १२ पर श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च को पुरुष सूक्त का मंत्रांश कहा गया है। वहाँ तो 'प्राणाद्वायुरजायत' और 'दिशः श्रोत्राद्' ये वाक्य मुझे मिल सके। कृपया इसका ठीक हवाला लिख भेजिए।

अभी लिङ्ग पुराण पर कुछ लिखाते समय प्रथम खण्ड ८-९-१० वें अध्याय में योग के अङ्गों का अच्छा वर्णन मिला। पाशुपत शैवों में योग-साधना का अधिक प्रचार था। योग के १० विघ्नों का वर्णन अध्याय ९।१-३ में है किन्तु वे पतंजलि मूलक ही जान पड़ते हैं।

भवदीय
वासुदेवशरण

वासुदेवशरण अग्रवाल द्वारा संपूर्णानंद जी को भेजा गया पत्र, जिसमें शास्त्र-चर्चा की गई है, 7 फरवरी 1966

Letter from Vasudev Sharan Aggarwal to Sampurnanand discussing various aspects of the Hindu philosophical texts or 'Shastras', 7 February 1966.

वियोगी हरि ।

कैम्प: १५, इंडिया एक्सचेंज प्लेस,
कलकत्ता १
५ सितम्बर, १९६७.

आदरणीय बन्धुवर,

नमस्कार ।

'हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन' द्वारा प्रकाशित 'माध्यम' के अगस्त, १९६७ के अंक में कल आपका लेख पढ़ा 'किसके लिए और क्यों' । ऐसे स्पष्ट विचार बहुत वर्षों के बाद मेरे देखने में आये । आपकी तरह मैं भी - यद्यपि सामाजिक कार्यों में व्यस्त रहने के कारण पत्र-पत्रिकाएं बहुत कम पढ़ता हूं - और उलझनों को सुलझाने का प्रयत्न भी करता हूं, फिर भी आये दिन क्या कविता और क्या लेख 'गोरख-धंधे' की तरह ही उलझन में डाल देते हैं । ये कवि और ये लेखक आखिर क्या कहना चाहते हैं और किनसे, यह सचमुच समझ में नहीं आता । फिर भी लिखे ही जाते हैं, गाये ही जाते हैं । जनता पर जैसे उनका ध्यान कभी जाता ही नहीं, अपने आप में ही उतराते-डूबते रहते हैं । मान बैठे कि पुरातन जो कुछ था, यद्यपि उसका अधिकांश सनातन है, उसको पछाड़ देते हैं । अ-कविता भी और अ-कहानी भी, सामने आ रही हैं । कहा जाता है कि मैथलीशरण और प्रेमचंद जैसों को तो कलम पकड़ना भी नहीं आता था - 'किमाश्चर्यमत: परम् ?' बधाई देता हूं, जो आपने इस उपेक्षित प्रश्न की ओर ध्यान तो खींचा । किन्तु ये कवि और ये लेखक आपके विचारों को सिगरेट के धुंए की तरह उड़ा दे सकते हैं, फिर भी सत्य तो सत्य ही रहेगा । असत्य कदापि स्थायित्व नहीं पा सकता ।

आशा है आपका स्वास्थ्य अब पहले से अच्छा होगा ।

आपका,
(वियोगी हरि)

डाक्टर बाबू सम्पूर्णानंदजी,
वाराणसी ।

वियोगी हरि द्वारा संपूर्णानंद जी को लिखा गया पत्र, जिसमें उन्होंने संपूर्णानंद जी के लेख 'किसके लिए और क्यों' पर अपने विचार व्यक्त किए हैं, 5 सितम्बर 1967

Letter from Viyogi Hari to Sampurnanand, expressing his views on an article written by Sampurnanand entitled 'Kiske Liye Aur Kyon', 5 September 1967.

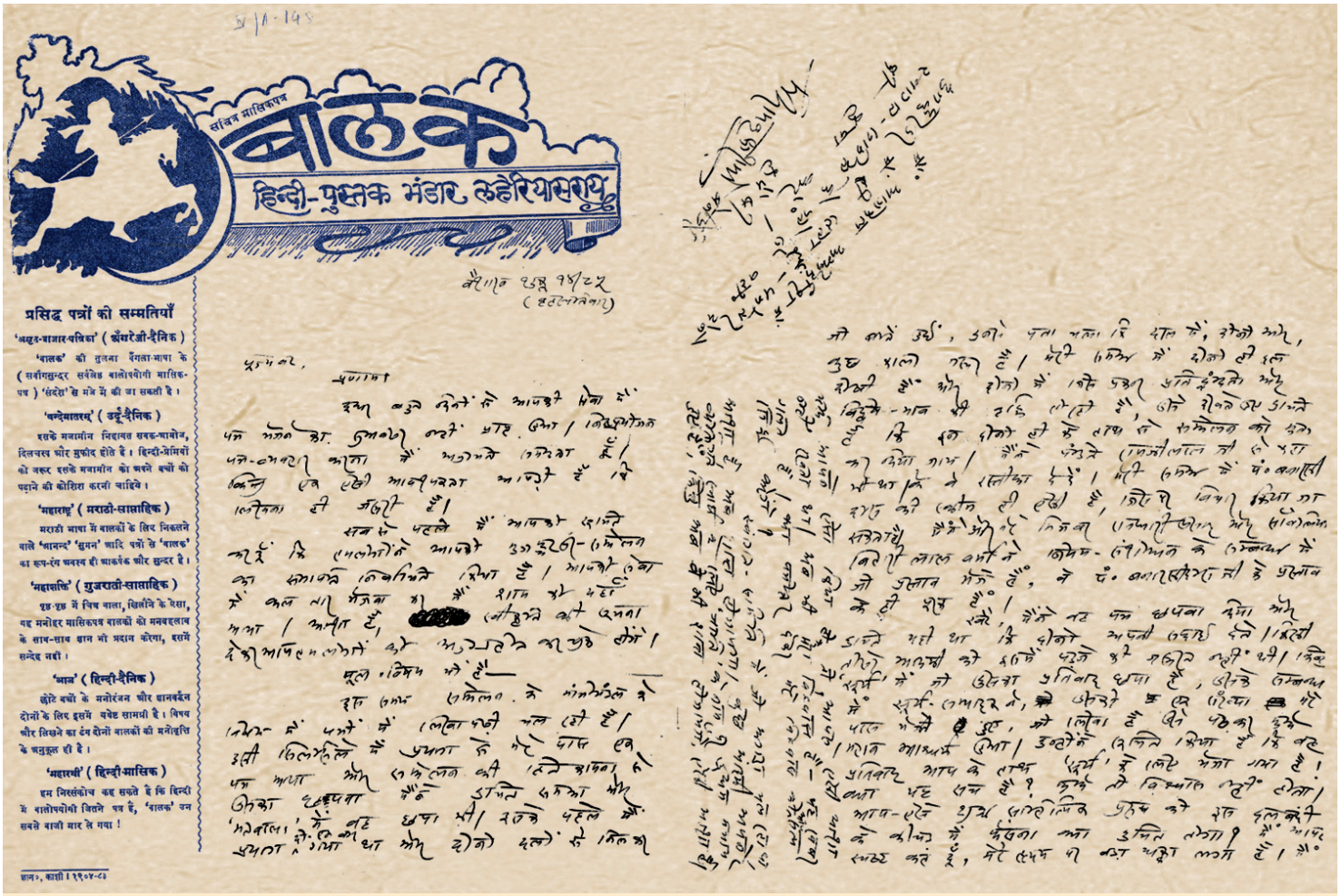

सचित्र मासिकपत्र
बालक
हिन्दी-पुस्तक भंडार, लहेरियासराय

प्रसिद्ध पत्रों की सम्मतियाँ

'अमृत-बाजार-पत्रिका' (अँगरेजी-दैनिक)

'बालक' की तुलना बँगला-भाषा के (सर्वांगसुन्दर सर्वश्रेष्ठ बालोपयोगी मासिक-पत्र) 'संदेश' से मजे में की जा सकती है।

'वन्देमातरम्' (उर्दू-दैनिक)

इसके मजामीन निहायत सबक-आमोज, दिलचस्प और मुफीद होते हैं। हिन्दी-प्रेमियों को जरूर इसके मजामीन को अपने बच्चों को पढ़ाने की कोशिश करनी चाहिये।

'महाराष्ट्र' (मराठी-साप्ताहिक)

मराठी भाषा में बालकों के लिए निकलने वाले 'आनन्द' 'सुमन' आदि पत्रों से 'बालक' का रूप-रंग अवश्य ही आकर्षक और सुन्दर है।

'महाशक्ति' (गुजराती-साप्ताहिक)

पृष्ठ-पृष्ठ में चित्र वाला, खिलौने के ऐसा, यह मनोहर मासिकपत्र बालकों को मनबहलाव के साथ-साथ ज्ञान भी प्रदान करेगा, इसमें सन्देह नहीं।

'आज' (हिन्दी-दैनिक)

छोटे बच्चों के मनोरंजन और ज्ञानवर्द्धन दोनों के लिए इसमें यथेष्ट सामग्री है। विषय और लिखने का ढंग दोनों बालकों की मनोवृत्ति के अनुकूल ही है।

'महारथी' (हिन्दी-मासिक)

हम निस्संकोच कह सकते हैं कि हिन्दी में बालोपयोगी जितने पत्र हैं, 'बालक' उन सबसे बाजी मार ले गया !

ज्ञान०, काशी । १९०४-८३

वैशाख शुक्ल १४/८५

रामवृक्ष बेनीपुरी द्वारा बनारसीदास चतुर्वेदी को मुजफ्फरपुर सम्मेलन के बारे में लिखा गया पत्र, वैशाख, शुक्ल 14/85

पूज्य चतुर्वेदीजी, सादर सविनय प्रणाम।
१५।६ का कृपापत्र मिला। राजेन्द्र-अभिनंदन
ग्रंथ वाला लेख छपरा के पते से भेजने की
कृपा कीजिएगा। १५ जुलाई के बाद ही भेजिए
तो अच्छा होगा। स्व० वर्मा जी के संस्मरण मैंने
कभी नहीं लिखे। उनके कुछ पत्र मेरे संग्रह में
होंगे। उनके दर्शन का सौभाग्य कलकत्ता में
ही हुआ था। कई बार उनसे भेंट हुई थी, बात भी।
उनका ज्ञानक्षेत्र बहुत विस्तृत था। उनसे भेंट होते
ही दुःख भाग जाता था। मेरे लिखे दस-बीस के
लगभग संस्मरण तो हैं, मगर अभी कोई प्रकाशक
नहीं मिल रहा है। मैंने 'हिमालय' छोड़ने के बाद
अपनी पुस्तकों के प्रकाशन का स्वत्व स्वाधीन
कर लिया है — पुस्तक-भण्डार से ले लिया है। अब
उन सभी पुस्तकों के प्रकाशन का नया प्रबन्ध करना
डालना चाहता हूँ। पुस्तक-भण्डार से अब किसी
प्रकार का सम्बन्ध नहीं रहेगा। है भी नहीं।
कन्याओं के विवाह में हजारों का ऋण हो गया
है। उसको चुकाने के लिए लेखनी ही एकमात्र
साधन है। कन्याओं के ब्याह की चिन्ता से तो
मुक्त हो गया, किन्तु ऋणभार से मुक्त होने की
चिन्ता अभी पीछे लगी हुई है। ईश्वर को भरोसा।
आशीर्वाद दीजिए कि बेड़ा पार हो जाय। पूज्य
राजेन्द्र बाबू की आत्मकथा का सम्पादन करने
के बाद उनके लेखों और भाषणों के
संग्रह का सम्पादन भी अभिनन्दन-ग्रंथ के
साथ ही साथ कर रहा हूँ। आत्मकथा के
प्रकाशक ही यह काम करा रहे हैं। 'ग्रंथ' के
प्रकाशन का प्रबन्ध तो आप नी० प्र० सभा कर
रही है जिसमें पं० रामदहिन मिश्रजी की
पूरी सहायता है; क्योंकि ग्रंथ उन्हीं के प्रेस में
छप रहा है। काम बहुत सुस्ती से हो रहा है।
मेरे ही ऊपर प्रूफ का बोझ भी है। एक बार भी
आपके साथ एक सप्ताह बिताने की लालसा है।
देखना है कि मनोरथ कब पूरा होता है। कृपा
बनी रहे। कृपाकांक्षी — शिवपूजन

POST CARD
REPLY.
ADDRESS ONLY
INDIA POSTAGE
पूज्यपाद पं० बनारसीदासजी चतुर्वेदी
टीकमगढ़
(मध्यभारत)

शिवपूजन सहाय द्वारा बनारसीदास चतुर्वेदी को लिखा गया पत्र, जिसमें उन्होंने अपनी पारिवारिक कठिनाइयों का उल्लेख किया है, तिथि का उल्लेख नहीं है ।

Letter from Shivpujan Sahay to Banarsidas Chaturvedi, wherein he discusses certain family difficulties.

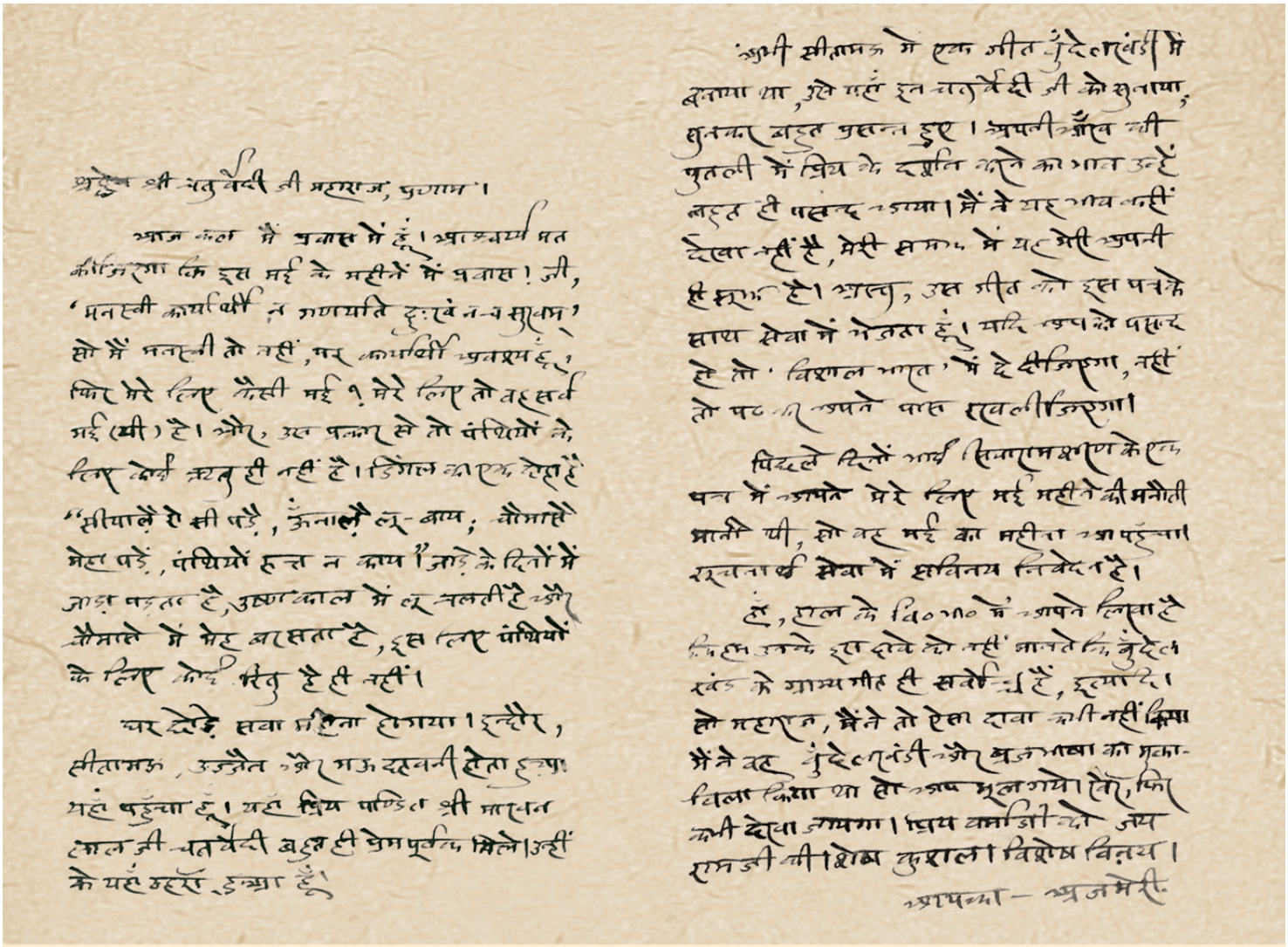

मुंशी अजमेरी द्वारा बनारसीदास चतुर्वेदी को लिखा गया पत्र, जिसमें उन्होंने 'विशाल भारत' के लिए एक बुंदेलखंडी गीत भेजने का उल्लेख किया है, 4 मई 1934

Letter from Munshi Ajmeri to Banarsidas Chaturvedi, wherein he discusses contributing a Bundelkhandi song for the journal 'Vishaal Bharat', 4 May 1934.

उपाध्याय जी को हिन्दी में इनाम दिया 26.5.37

541 प्रेमा होटल, अमीनाबाद, लखनऊ.
7. 5. 37.

(2)

आदरणीय टंडनजी, प्रणाम।

मैंने इस साल के दूसरे मङ्गलप्रसाद पुरस्कार-निर्णय के सम्बन्ध में जो खबरें सुनी हैं, अगर वे सच हैं तो निस्सन्देह उसमें अन्याय की हद हो गई है। मैं आपसे साविनय जानना चाहता हूँ :—

(1) सम्मतिदाताओं की सम्मतियाँ (सम्मेलन की) और मङ्गलाप्रसाद-पुरस्कार-समिति का निर्णय, जिस पर पं. अयोध्यासिंह उपाध्यायजी के प्रियप्रवास को मङ्गलाप्रसाद-पुरस्कार मिला है, सम्मेलन से मुझे प्राप्त हो सकता है या नहीं;

(2) यदि नहीं, तो क्यों — क्यों वह किसी तरह भी जनता और समस्त साहित्यिकों के सामने नहीं आ सकता,

(3) उस प्रथम निर्णय में, जिसमें पं. अयोध्यासिंह उपाध्याय जी के प्रियप्रवास के लिये मङ्गलाप्रसाद-पुरस्कार का निश्चय हुआ है, इस साल का दूसरा पारितोषिक भी निश्चित किया जा सकता था या नहीं;

(4) यदि नहीं, तो क्यों,

(5) इस साल के दूसरे मङ्गलाप्रसाद-पारितोषिक के लिये, पं. अयोध्यासिंह उपाध्याय जी के प्रियप्रवास के निकल जाने पर, निर्णायकों से पुनः सम्मति मांगते हुए (सम्मेलनवाली) समिति ने किसी नियम की अवहेलना की है या नहीं, 'साकेत' और 'गुंजन' के तीसरी बार जाने में, — इन्हें अपनी तरफ़ से दो बार भेजते हुए,

(6) मङ्गलाप्रसाद-पारितोषिक-समिति (सम्मेलन) केवल 'साकेत' और 'गुंजन' को पुनः पुनः चुनकर क्यों सौभाग्यप्रदान करना चाहती है; — क्या इस उच्चता और गौरव के हिन्दी में दूसरे साहित्यिक और ग्रन्थ नहीं?

मैं अत्यन्त नम्र भाव से आपसे इनके उत्तरों की प्रार्थना करता हूँ। आपके घर का पता ठीक ठीक मालूम न होने से इस पत्र की एक प्रतिलिपि सम्मेलन भी भेज रहा हूँ। एक टिकट भी उत्तर के लिये रख दिया है, जल्दी के विचार से। विश्वास है कि आप अपने प्रति मेरे भाव को कुण्ठित न होने देंगे। इति।

सविनय

निराला

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' द्वारा श्री पुरुषोत्तमदास टंडन को मंगलाप्रसाद पुरस्कार के विषय में लिखा गया पत्र, 7 मई 1937

Letter from Suryakant Tripathi 'Nirala' to Shri Puroshottam Das Tandon, discussing the felicitation of the latter by the Mangalaprasad Award, 7 May 1937.

IV/A-537

नक्षत्र
कालाकांकर
28.1.38

प्रियवर चतुर्वेदी जी -

आपका कृपापत्र कल मिला। अनेक धन्यवाद। बहुत दिनों के बाद आपके पत्र के दर्शन मिलने से बड़ी प्रसन्नता हुई।

सुमित्रानंदन पंत द्वारा बनारसीदास चतुर्वेदी को लिखा गया पत्र, जिसमें उन्होंने कवि सम्मेलनों में पढ़ी जा रही कविताओं के स्तर पर प्रकाश डाला है, 28 जनवरी 1938

Letter from Sumitranandan Pant to Banarsidas Chaturvedi, expressing his views on the standard of poems which were being recited at the present Kavi-Sammelans, 28 January 1938.

सेवाग्राम
वर्धा सी.पी.

SEVAGRAM,
WARDHA, C.P.

سیواگرام
وردھا-سی-پی

१२. १०. ४०

भाई संपूर्णानंदजी,

हिंदी या हिंदुस्तान ही मेरे सामने है. लेकिन इस में उर्दू का बहिष्कार नहीं है तीनों की जड तो एक ही है और जब हमारे में ऐक्य पैदा हो जायेगा तो हम अपनी मूर्खता पर हसेंगे कि हमने क्यों इस बारे में झगडा किया. इस भूमिका से हरिजन सेवक का लेख जिस बारे में आपने लिखा है पढना चाहिये

प्यारेलाल की उर्दु की तारीफ मैंने इस कारण की कि मेरे पास दुसरे उर्दू के जानकार नहीं हैं. और हिंदुस्तानी भाषा बनाने के लये उर्दू का ज्ञान होना चाहिये. प्यारेलाल की हिंदी और उर्दू का भेद मैंने सिर्फ वस्तुस्थिति बताने के कारण किया. उस में से आपने जो अर्थ घटाया है वह मेरे मन में कभी नहीं था. हम कांग्रेसवाले तो हिंदुस्तानी नाम छोड कर दुसरे का प्रयोग नहीं कर सकते हैं. कांग्रेस के नजदीक हिंदुस्तानी राष्ट्र भाषा है. सच तो यह है कि हिंदुस्तानी नाम की हिंदी उर्दू से अलग कोई भाषा नहीं है ३ – ना ना है. उर्दू शब्द से आदमी अर्थ समझ लेगा, सा ही हिंदी के लिये. मगर हिंदुस्तानी किस बोली का नाम है? वह होनी चाहिये हिंदी उर्दू का संगम ही न? यह संगम पैदा करने की मेरी कोशिश है. आप की भी हो

आप का

M. K. Gandhi

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी द्वारा डॉ0 संपूर्णानंद को लिखा गया पत्र जिसमें उन्होंने हिंदी, हिंदुस्तानी और उर्दू की चर्चा की है, 12 अक्टूबर 1940

Letter from the Mahatma Gandhi to Dr. Sampurnand, expressing his views on Hindi, Hindustani and Urdu languages, 12 October 1940.

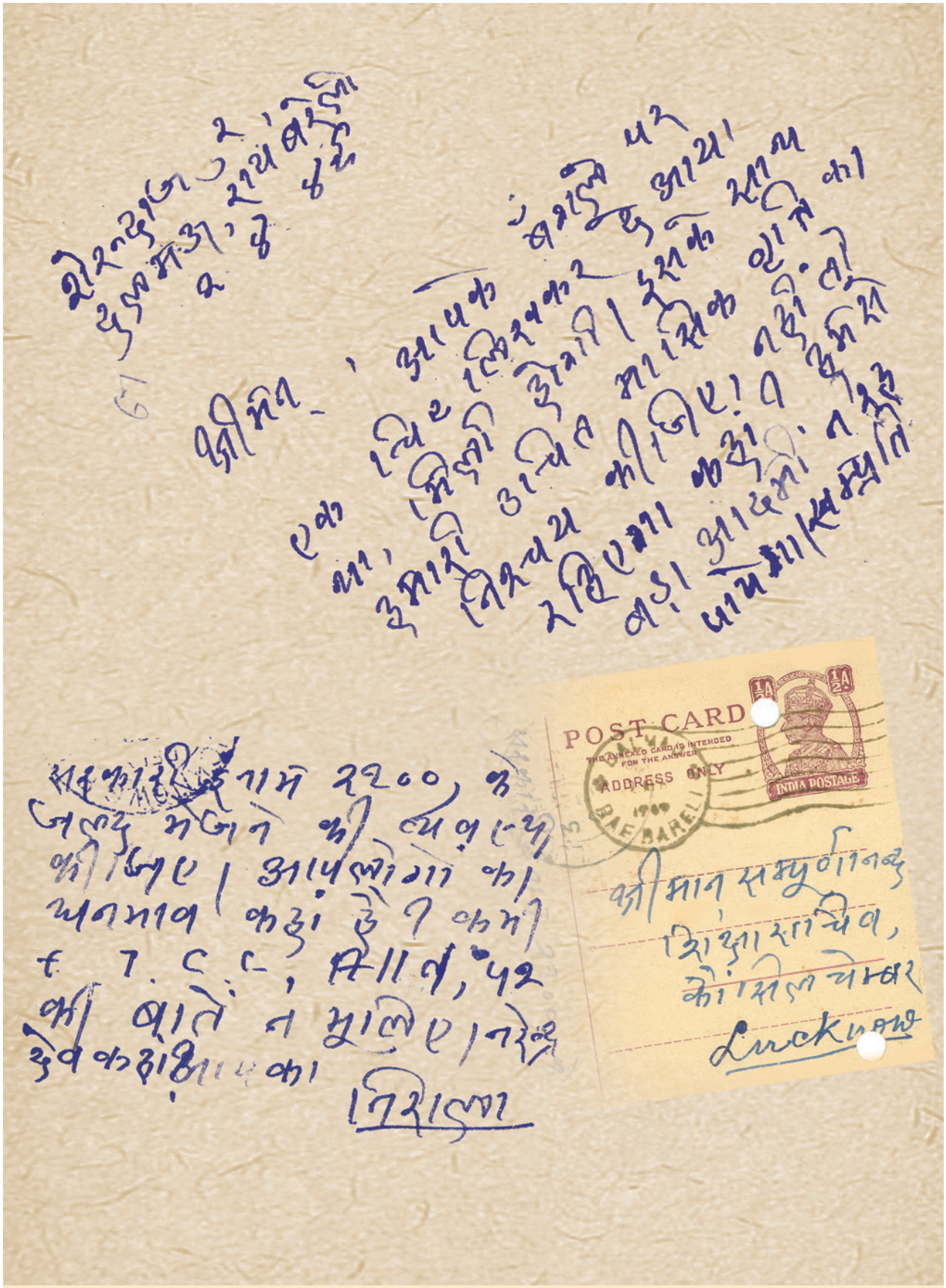

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' द्वारा श्री संपूर्णानंद को मासिक वृत्ति के लिए लिखा गया पत्र, 2 अप्रैल 1949

Letter from Suryakant Tripathi 'Nirala' to Shri Sampurnand, expressing his requirement for a monthly stipend, 2 April 1949.

श्री बनारसीदास चतुर्वेदी द्वारा संपूर्णानंद जी को लिखा गया पत्र जिसमें संपूर्णानंद जी की रचना 'किसके लिये और क्यों !' की प्रशंसा की गई है, 15 सितम्बर 1967

Letter from Banarsidas Chaturvedi to Sampurnanand, wherein he bestows fulsome praise on the article 'Kiske Liye Aur Kyon' authored by Sampurnanand, 15 September 1967.

9, दरियागंज, दिल्ली।
३/९/३९

श्रद्धेय चतुर्वेदी जी,

आपका कृपा-पत्र यथा-समय आया। मैं बाहर चला गया था, इसलिए कुछ देर से मिला। आशा है उत्तर की देरी के लिए आप क्षमा करेंगे।

पूज्य द्विवेदी जी की साहित्यिक महानता मैं मानता हूँ, उनका आदर भी बहुत करता हूँ; लेकिन उनके बाद के लेखक उनके शिष्य होते हुए भी मात्र शिष्य नहीं हैं। सबकी अपनी-अपनी शैलियाँ हैं, अपने-अपने विचार हैं। उनका मूल्य भी है। मेरा अनुमान है, और मुझे विश्वास भी है कि आपका स्व० श्रद्धेय गणेशजी वाला लेख विद्यार्थियों के लिए विशेष-रूप से लाभदायक होगा।

साहित्य-क्षेत्र से दूर आप कहाँ हैं? साहित्य आप बहुत लिखते रहे हैं और रहेंगे। संग्रह के आपका परामर्श मेरे लिए और विशेषकर विद्यार्थियों के लिए हितकर होगा। आजकल के संग्रह जैसे निकल रहे हैं, वह आप देख ही रहे हैं। विद्यार्थियों का ध्यान न रखकर पैसे का ध्यान रखा जाता है, उपयोगिता भी उनकी जितनी होनी चाहिए, विद्यार्थियों के लिए उतनी नहीं होती। हाँ, संग्रहकर्ताओं और प्रकाशकों की जेब अवश्य भर जाती है।

श्री रामजी को भी मैं लिख रहा हूँ। अवसर मिला तो उनसे आगरे जाकर मिलूँगा भी। लेकिन अपने परामर्श से आप वंचित रखेंगे तो वह बड़ी दुर्भाग्य की बात होगी।

आप इधर कब तक पहुँचते हैं?

विशेष कृपा। आशा है आप सानन्द होंगे।

प्रणाम सहित,
आपका विनम्र
— यशपाल

यशपाल द्वारा बनारसीदास चतुर्वेदी को साहित्यिक परिस्थिति की चर्चा करता हुआ लिखा पत्र, 3 सितम्बर 1939

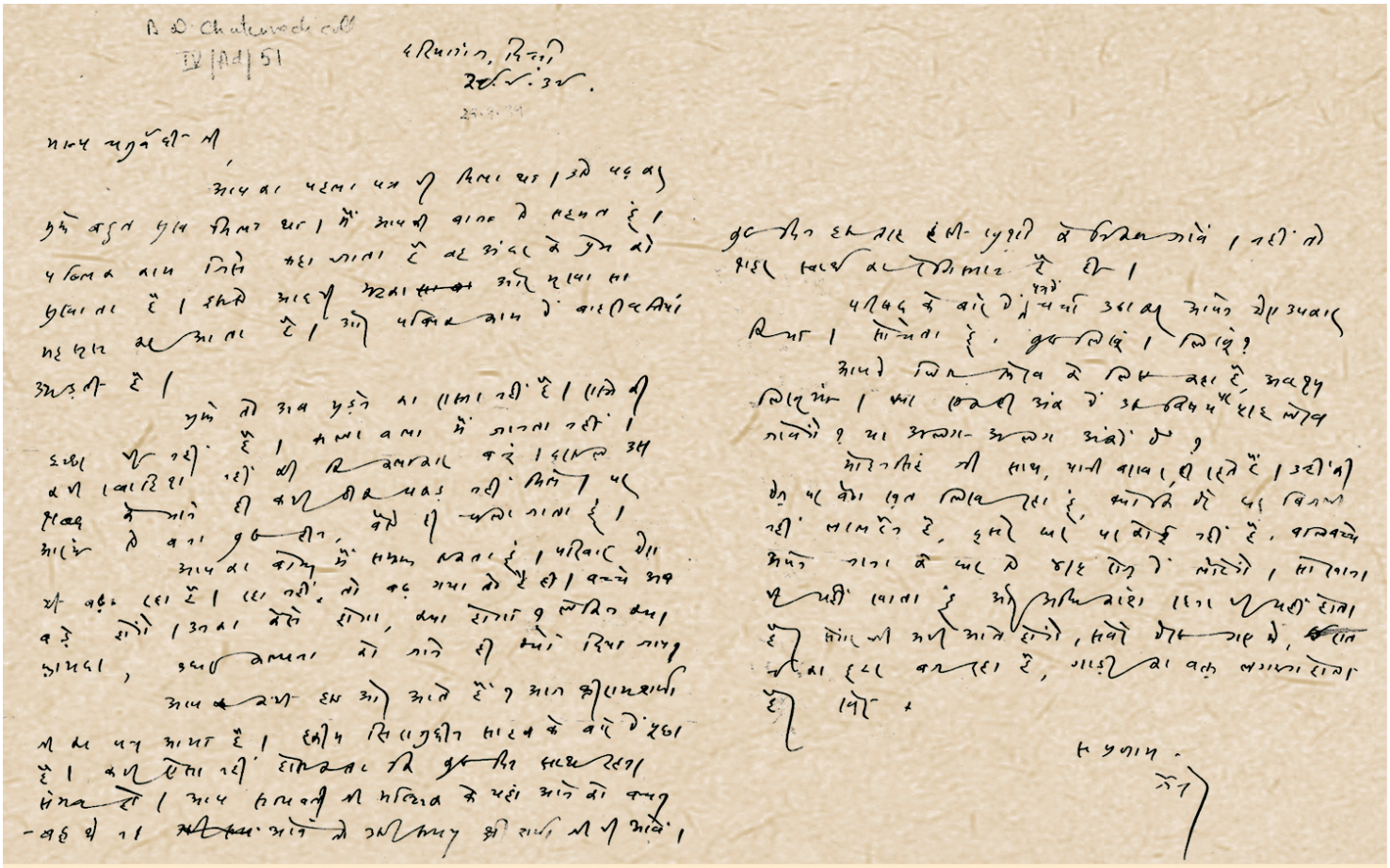

जैनेन्द्र द्वारा बनारसीदास चतुर्वेदी को लिखा पत्र आत्मीय पत्र, 29 सितम्बर 1939

कला देश की सेवा में
पृथ्वी थियेटर्स

Imp. Coll. 118

GRAMS: NATYARATNA
तार : नाट्यरत्न
BOMBAY MATUNGA
PHONE RES: 60215

PRITHVI Theatres

कैम्प मैजिस्टिक सिनेमा
फैज़ाबाद

ROYAL OPERA HOUSE,
Queens Road,
~~BOMBAY~~ 4.

४-१२-1956

आदरणीय डाक्टर साहब,

श्री प्रान नाथ खन्ना के हाथों यह पत्र आपकी सेवा में भिजवा रहा हूं। यह हमारे थियेटर के मैनेजर हैं और मेरे फुफेरे भाई -

आपने जो कष्ट उठा कर मेरे लिये सुविधा की है इस के लिये कोटि कोटि धन्यवाद

निवेदन है कि दस तारीख़ से लखनऊ में "मेफेयर" थियेटर में "किसान" खेल से कार्यक्रम आरंभ कर रहा हूं। आशा है आप सहपरिवार पधार कर कृतार्थ करेंगे

आशीर्वाद का अभिलाषी

आपका

अपना

पृथ्वीराज कपूर